International Journal of Applied Research 2016; 2(3): 618-620

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(3): 618-620
www.allresearchjournal.com
Received: 28-12-2015
Accepted: 29-01-2016

वंदना रानी
डी0 सी0 कालोनी बरनाला तवंक सिरसा, हरियाणा, भारत।

Correspondence
वंदना रानी
डी0 सी0 कालोनी बरनाला तवंक सिरसा, हरियाणा, भारत।

रंग बदलती दुनिया में उपन्यास में संक्रमित संस्कृति

वंदना रानी

प्रस्तावना

संस्कृति संचयी होती है। जब एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी के नवीन तत्वों को हस्तांतरित करती है, तो उसमें सामाजिक गुण होते है। ये गुण ही सामाजिक व्यवस्था एवं सम्बन्ध को अच्छा बनाते हैं। कुछ पाश्चात्य संस्कृति की विशेषताओं को हम ग्रहण कर रहे है ताकि हमारी संस्कृति स्वयम् साधन न होकर साध्य बनती रहे। सके अर्न्तगत आदर्श नियम, प्रतिमान सम्मिलित होते है, जिन पर समाज के प्रत्येक व्यक्ति को चलना आवश्यक होता है। न चलने की स्थिति में उसे अपराध समझकर दण्डित किया जाता है।

सांस्कृतिक सामाजिक प्रणाली का एक मुख्य अंग है, समाज की रचना में सामजिक प्रणाली, व्यक्तित्व तथा सांस्कृतिक प्रणाली का महत्वपूर्ण योग रहता है।

उदाहरण स्वरूप

महात्मा गांधी ने वर्णाश्रम धम्र की रक्षा का मार्ग सुझाया। उन्होने भिन्न–भिन्न कृतियों के लोगों को भिन्न–भिन्न धन्धों जैसे : खादी बनाओ, ग्राम स्कूल चलाओ, कागज बनाओ, गऊ सेवा, सफाई का कार्य देकर बेकारी की समस्या को दूर करने का उपाय सुझाया। उन्होने अपने जीवन से ही हमें वानप्रस्थ व सन्यासाश्रम का पाठ पढ़ाया।[1]

संस्कृति और समाज अन्योन्योश्रित है, एक दूसरे के पूरक है। संस्कृति का विकास समाज के आधार पर ही होता है। संस्कृति ही समाज को सन्मार्ग की ओर प्रवृत करती हैं। डॉ0 उमाकान्त के शब्दों में, ''संस्कृति की पहली अनिवार्यता ही समाज है और संस्कृति का अस्तित्व समाज के अस्तित्व पर निर्भर है। सामाजिक अवस्था के अनुसार ही संस्कृति का स्वरूप होता है। अतः समाज की संघटना का, सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व संस्कृति ही है।[2]

संस्कृति सदैव परिवर्तनशील रही है। प्रत्येक काल में इसका क्रम विभिन्नताएं लिए हुए रहा है। कारण यह है कि प्रत्येक समाज अपनी आवश्यकताओं एवं परिस्थिति के अनुकूल सांस्कृतिक तत्वों में परिवर्तन कर देता है। उदाहरण स्वरूप – पहले आने–जाने का कोई साधन नहीं था, लोग पैदल जाते थे, आज साईकिल से लेकर वायुयान तक उपलब्ध है। संस्कृति संचार–शील होती है अर्थात् इसके तत्व एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते रहते है। संस्कृति के गुणों को आने वाली पीढ़ी ग्रहण करती है। अतः इसमें भौतिक तथा अभौतिक दोनों प्रकार के तत्वों का संचार होता है।

संस्कृति में केवल अभौतिक तत्व (रूढ़ियाँ, रीति–रिवाज, परम्पराएँ, मान्यताएं, कला एवं दर्शन) आदि ही नहीं आते, अपितु भौतिक तत्व, रहन–सहन (पहनावा), यातायात के साधन (रेल, मोटर, वायुयान) औजार, सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुएं एवं मनोरंजन की वस्तुएं आदि सभी संस्कृति के अर्न्तगत विकासशील तत्व आते है।

अतः स्पष्ट है कि समाज संस्कृति का आधारफलक है। यदि सभ्यता के साथ–साथ समाज का उदय होता हे तो संस्कृति से समाज को जीवन शक्ति प्राप्त होती है।

हमारे समाज की सबसे छोटी इकाई मनुष्य है। मनुष्य से परिवार बनता है। परिवारों से समाज। परिवार में रहकर ही मनुष्य सब कुछ सीखता है। अच्छी बातों को अपनाता है बुरी आदतों को छोड़ता है। परिवार में रहकर ही वह अपनी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इस उपन्यास में भी परिवार के महत्व को समझाया गया है। तमन्ना पर पति की हत्या के आरोप का एक उदाहरण देखिए– ''कत्ल'' तमन्ना की जगह फिर जेलर साहब ने ही उत्तर दिया।

''किसका?''

''अपने पति का।''' जेलर साहब ने आगे कहा।

''नहीं। वह मेरा पति नहीं था।'' तमन्ना ने लगभग चीखते हुए उत्तर दिया और लड्डू वहीं पर फेंककर दोनों हथेलियों में चेहरा छिपाते हुए भागती हुई अपनी कोठरी की तरफ बढ़ गई।[3]

लेकिन वेदना एवं करुणा ऐसी स्थिति है जो मानव मन को न केवल विचलित करती है बल्कि उसकी दयनीय स्थिति को भी द्योतक करती है। वेदना एवं करुणा की स्थिति तब पैदा होती है जब उसकी पारिवारिक स्थिति समय तथा परिस्थितियों के अनुकूल न हो। जब व्यक्ति अपनी मानसिक पीड़ा को किसी के सामने अभिव्यक्त नहीं कर पाता और व्यक्त करने का साहस उसे तोड़कर रख देता है क्योंकि आमतौर पर व्यक्ति किसी दूसरे के सामने व्यक्ति की मानसिक पीड़ा अत्यंत बढ़ जाती है और उसकी पीड़ा को समझने के लिए अत्यधिक करुणा एवं संवेदना की आवश्यकता होती है। तमन्ना का प्रेम पात्र उसे भूल जाता है। संस्कृतिक संक्रमण का एक उदाहरण देखिए–''दीदी! भूल जाओ उसे निर्मोही को। जिसके लिये आपने इतना त्याग किया। जिसकी खातिर जिल्लत सही, उसने एक बार भी पीछे मुड़कर आपकी तरफ नहीं देखा। वापिस आते ही उसे सब कुछ मालूम हो गया था। परन्तु एक बार भी तुमसे मिलने नहीं आया। आपके तो इतना भी नहीं मालूम कि वह कब वापिस आया और वह कहां रहा। जानती है आप? वह बहुत बड़ा अफसर बन चुका है। अपनी घर–गृहस्थी बसाकर सुख–चैन और आराम की जिन्दगी बसर कर रहा है और उसके प्यार के बदले में आपको क्या मिला; जेल की चहारदीवारी, हथकड़ियां और बेड़ियां।[4]

मनुष्य समाज और परिवार की प्रमुख इकाई है। मनुष्य से परिवार, परिवार से ही समाज बनता है। समाज में रहकर ही वह अपनी सारी आवश्यकतायें पूरी कर सकता है। ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है। मनुष्य समाज के बिना और समाज मनुष्य के बिना अधूरा है। नारी शिक्षा के वे विरोध थे। विधवा विवाह, बहु विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा आदि कुप्रथाएं प्रचलित थी तथा इनको समाप्त करना बहुत ही आवश्यक था। सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक पाखंडों, स्वार्थपरकता का इन्होनें बेहिचक विस्तारपूर्वक वर्णन किया है–''मैं सुगंधा को कैसे बताती कि जिस पर तू आंखे मूंदकर इतना विश्वास कर रही है वह अन्दर से कितने नीचे विचार रखता है? तो वह कैसे जीती? वह तो उसे पत्नी मानने को तैयार ही नहीं था। अगर सुगंधा को इसकी भनक भी पड़ जाती तो उसके अर्न्तमन में पूजा स्थान पर सुषोभित पीयूष की मूर्ति खण्ड–खण्ड हो जाती और अंकल सच मानिये मेरा इरादा पीयूष को मारना हरगिज नहीं था। मैं तो अपनी लाज बचाने के लिए उसे डराकर भगाना चाहती थी। पता नहीं कैसे छीना–झपटी में गोली चल गई और मेरे हाथों सुगंधा का जीवन तबाह हो गया।'' तमन्ना फफक–फफक कर रो पड़ी।[5]

इस उपन्यास में कैदियों के जीवन पर चिंता व्यक्त की है– 'उसे इस जेल में रहते हुए वर्षो बीत गये थे। और भी बहुत सी महिला कैदी यहां रहती थी परन्तु इन वर्षो के दौरान किसी भी महिला से परिचयात्मक मिलाप से अधिक उसका सम्पर्क नहीं बन पाया था। जेल की कैद के दौरान के आरंभिक समय में जैसा उसका अहम् ही एक विषैला गोखरू नाग बनकर जिन्दगी के असंख्य उतार–चढ़ाव चढ़ती जवानी में ही देख लिये थे। दिल की समस्त कामनाएं एवं एशनाएं इस चहारदीवारी में दम तोड़कर रह गयी थी। भावनाओं के मोहक चित्र टुकड़े–टुकड़े होकर बिखरते हुए कहीं से कहीं तक उड़ गये । रह गई तन को शेष लिये हुए बेचारी तमन्ना।[6]

आज देश को भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी और आंतकवाद जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उसका एक ही कारण है कि देश की बागडोर भ्रष्ट नेताओं के हाथ में है। ये नेता अपने स्वार्थ के बारे में सोचते हैं। इन भ्रष्ट नेताओं से भारतीय प्रजातंत्रीय प्रणाली को सुरक्षित रखने का अनुरोध किया गया है। इस उपन्यास में राजनीति के नेता लोग समाज के आम लोगों को मरते आराम से देख रहे थे। उनकी चीख पुकार का उन पर कोई भी असर नहीं पड़ता था।

प्रस्तुत उपन्यास में डॉ0सुनीता अग्रवाल ने गांव की व शहर की आर्थिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला है। इस उपन्यास में या तो मध्यम वर्गीय लोग थे या उच्च वर्गीय लोग। इस उपन्यास में अंधविश्वास, पारस्परिक कलह, मानसिक पिछडापन आदि सर्वत्र व्याप्त है। इस उपन्यास में आर्थिक दशा अच्छी नहीं थी। गलियां बहुत तंग थी जिसमें कार तो दूर की बात है रिक्शा बड़ी मुश्किल से जाता था। लेकिन शहरों की आर्थिक दशा बहुत अच्छी रही है। इसका एक उदाहरण देखिए–''तमन्ना! अगर हमें जिन्दगी से कुछ बनना है अपना अलग अस्तित्व बनाना है तो परिश्रम तो करेना ही पड़ेगा। हर व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि उसे प्रभु ने इस विश्व में कुछ कर दिखाने की आशा से भेजा है और यदि हम जन्म लेकर भी इस धरा पर कुछ विशेष नहीं करते तो हमारा यह जीवन व्यर्थ है। धिक्कार है ऐसे जीवन पर जो स्वार्थो में लीन रहे।''[7]

नायक आर्थिक व्यवस्था को सुधारने के लिए अमीर वर्ग में शामिल होने के लिए ही अपने परिवार को छोड़कर दुबई जाता है और वहां पर अकेला रहकर कमाई करता है और रूपये अपने घर भेजता है। सांस्कृतिक –बोध का परिचय इस प्रकार दिया है–'बस, बस अभि; अच्छी तरह मैं दर्शन तत्व का भेद नहीं पा सकती।'' तमन्ना उसकी दार्शनिकता पर घबराकर बोली। उसे मालूम था कि अभिशेक दार्शनिक प्रवृति से समाहित था। जब कभी वह विषय पर बोलना चाहता। तमन्ना को बोरियत सी अनुभव होने लगती थी और आज वहीं विषय को जल्दी से जल्दी खत्म कर देना चाहती थीं।[8]

आलोच्य उपन्यास में उन्होंने ऐतिहासिकता से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, नारी का चित्रण, सांस्कृतिक आदि सभी तथ्यों का समुचित वर्णन किया है । इसी पर चिंता व्यक्त करते हुए लिखा है–

''कत्ल'' तमन्ना की जगह फिर जेलर साहब ने ही उत्तर दिया।

''किसका?''

''अपने पति का।''' जेलर साहब ने आगे कहा।

''नहीं। वह मेरा पति नहीं था।'' तमन्ना ने लगभग चीखते हुए उत्तर दिया और लड्डू वहीं पर फेंककर दोनों हथेलियों में चेहरा छिपाते हुए भागती हुई अपनी कोठरी की तरफ बढ़ गई।[9]

भारतीय संस्कृति की महानता का आंकलन इसी बात से लगाया जा सकता है कि यह संसार के भिन्न–भिन्न समुदायों में विभिन्न ऐतिहासिक परम्पराओं का भली–भान्ति निरीक्षण करने पर ही इसे पहचाना है या विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने के बाद ही इसे स्वीकार किया जा सकता है कि मानव एक है। जैसे–'अभिषेक एक मध्यम वर्गीय साधारण परिवार से संबंध रखता था। उसके पिता जी की जूतों की दुकान थी। परिवार में उसके माता–पिता के अतिरिक्त एक बड़ा भाई था। जो कि शादी के उपरान्त अपनी पत्नी के बहकावे में आकर अपने ससुराल में ही जा बसा था। और अपने परिवार से अपने हिस्से की जायदाद का बंटवारा भी ले चुका था। संक्षेप में अब तो अभिषेक ही अन्धे माता–पिता की लाठी था। वृद्ध माता–पिता की सेवा में देश की सेवा ही उसके जीवन का मुख्य आशय था।[10]

उसकी मूलभूत आवश्यकताएं एक है। अतः उसकी संस्कृति भी एक हो सकती है। भारत में विभिन्न धर्म प्रचलित हैं। विभिन्न जातियां, संप्रदाय, विचारक परस्पर धर्म संबंधी मूल्य हैं। इनका वर्णन भी आलोच्य उपन्यास में किया गया है। मूल रूप से इसके संस्कारों, पूजा–अर्चना, व्रत–उपवास, मूर्ति पूजा, अंधविश्वास, धर्म के नाम पर झगड़े, छुआछुत की समस्या समाज में धर्म के नाम पर दिन–प्रतिदिन फैलती ही जा रही थी। धर्म के कारण लोग एक दूसरे को मारने पर तुले हुए थे। हिंदु मुसलमानों को अच्छा नहीं समझते थे। उनके धर्म अलग–अलग थे। उनके धर्मों को मानने का ढंग भी अलग–अलग था। ये एक दूसरे के धर्म को नीचा दिखाने का प्रयास करते थे।'सगाई के समय ही शादी की तारीख तय कर ली गई। शादी आज से ठीक दस दिन बाद पण्डित जी के तय करने पर ही रखी गई। तमन्ना के पिता जी शादी के लिए उतावले थे। सच ही तो है हमारे समाज में लड़की

को एक बोझ माना जाता है। जब तक वह ससुराल न पहुंच जायें माँ बाप की थी आखिर वे भी तो भारतीय समाज का ही एक अंग थे।[11]

आज भी हमारे समाज में लोग सुबह उठकर सुरज को पानी देते हैं। उसको नमन करते हैं। सुबह धूप बत्ती करते हैं, भजन करते हैं। भारत एक धार्मिक देश है भले ही इसमें अलग–अलग प्रकार के लोग रहते हैं लेकिन धर्म में सबको समानता दी गई है। कोई किसी के धर्म को बुरा नहीं कहेंगे और न ही नीचा दिखाने का प्रयास करेगा। भारत में सभी धर्मों को समान समझा जायेगा।

नीति का उल्लंघन धर्म का उल्लंघन और धर्म का उल्लंघन नीति का उल्लंघन माना जाता था। धर्म और न्याय की राह पर चलने को नैतिक जीवन का आदर्श पथ पर स्वीकारा जाता था। धर्म और न्याय से अभिप्राय है साहित्यिकता, सत्य एवं कल्याण की भावना, त्याग, सेवा, बलिदान एवं तपस्या के भावों को जीवन में अपनाना। घर में बड़े लोगों की सेवा करना भी कर्त्तव्य है। प्रेमचंद–कालीन उपन्यासों में धर्म और नीति की परम्पराओं का पालन करना ही मुख्य कर्तव्य होता था। नैतिक मान्यताओं को न मानना अधर्म है, अनैतिक है। परन्तु उत्तर–प्रेमचंद युग में धर्म और नीति की परिभाषा ही बदल गई है। परिवर्तित मूल्यों के युग में व्यक्ति ने यह समझ लिया कि ईश्वर, धर्म, नीति कुछ नहीं है।[12]

निष्कर्षः

पुरातनपंथी, धर्म के नाम पर परम्परओं को स्वीकारने में अब व्यक्ति का मन द्वन्द्वरत हो उठता है, क्योंकि वह जान गया है कि नीति और नियम ईश्वरदत न होकर स्वयं मानवसमाज के रचाए हुए है, अतः इस ओढ़ी हुई नैतिकता का कोई अर्थ नहीं है, कोई महत्त्व नहीं है। व्यक्ति में इतना साहस, सामर्थ्य नहीं है कि वह परम्परागत पल रही समाज की मान्यताओं से स्वयं को पृथक् कर ले।

संदर्भ सूचीः

1. कल्याण, हिन्दू संस्कृति विशेषांक, हिन्दू संस्कृति, स्वामी ब्रहमानन्द सरस्वती जी महाराज, पृ0 21
2. डॉ0 उमाकांत मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता पृ0 387
3. डॉ0 सुनीता अग्रवाल, रंग बदलती दुनिया, पृ.10
4. डॉ0 सुनीता अग्रवाल, रंग बदलती दुनिया, पृ.100
5. डॉ0 सुनीता अग्रवाल, रंग बदलती दुनिया, पृ.95
6. डॉ0 सुनीता अग्रवाल, रंग बदलती दुनिया, पृ.11
7. डॉ0 सुनीता अग्रवाल, रंग बदलती दुनिया, पृ.27
8. डॉ0 सुनीता अग्रवाल, रंग बदलती दुनिया, पृ.25
9. डॉ0 सुनीता अग्रवाल, रंग बदलती दुनिया, पृ.10
10. डॉ0 सुनीता अग्रवाल, रंग बदलती दुनिया, पृ.19
11. डॉ0 सुनीता अग्रवाल, रंग बदलती दुनिया, पृ.36
12. अधूरे साक्षात्कार, नेमिचंद जैन, पृ0 22